शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'महाभोज' का राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक अध्ययन
(ग्रामीण जीवन के सन्दर्भ में)

योगिता राठौर (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
डॉ.मनीषा शर्मा
प्राचार्या चोईथराम कालेज
इन्दौर, मध्यप्रदेश, इंदौर

शोध संक्षेप

स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय साहित्य में ग्रामीण जन चेतना से युक्त दृष्टि का विकास हुआ है। ग्रामीण जन चेतना का स्फुरण विभिन्न साहित्यिक विधाओं में अनेक प्रकार से देखने को मिलता है। कथा साहित्य में विभिन्न दृष्टिकोणों के द्वारा ग्रामीण जीवन के विविध पक्षों का चित्रण किया गया है। ग्रामीण जीवन की गाथा हिंदी साहित्य में पहले भी की गई है, परन्तु स्वातंत्र्योत्तर युग में यह और अधिक बलवती हो गयी है अर्थात हिंदी साहित्य में यह प्रवृत्ति स्वातंत्र्योत्तर युग की ही देन है। हिंदी के कई आलोचकों ने भी इस मत का समर्थन किया। आंचलिकता अर्थात ग्रामीण संकल्पना की साहित्य में शुरुआत के बारे में डॉ..भगवती प्रसाद शुक्ल कहते हैं- "सन 1947 से लेकर 1960 तक का युग आंचलिक साहित्य के अध्ययन और सृजन का युग रहा है।"1 लक्ष्मण दत्त गौतम के अनुसार- "आंचलिकता का उद्भव स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत घोषित गणतंत्रतात्मक आस्था से संबध है "2 "इसी समय (स्वातंत्र्योत्तर काल) आंचलिक कहानी का विशेष आन्दोलन उभरा।"3 आंचलिकता हिंदी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति रही है, परन्तु वह एक प्रवृत्ति विशेष तक सीमित नहीं रही है। आंचलिकता हिंदी साहित्य में एक आन्दोलन के रूप में उभर के आई है। इसी के साथ आंचलिक कहानियों एवं उपन्यासों को एक नई धारा के रूप में देखने और पहचानने का कार्य भी शुरू हुआ। यही वजह थी कि नई कहानी के दौर के बाद भी आंचलिक धारा सशक्त ही रही और इस दिशा में कई श्रेष्ठ रचनाएं प्रकाशित हुई। नये रचनाकारों ने आंचलिकता को नई दृष्टि से आत्मसात किया और आधुनिक अवबोध के अनुरूप उसे परिवेश सहित प्रस्तुत करने का कार्य किया है।

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य में जिस प्रकार ग्रामीण स्पंदन शुरू हुआ है। उसका अपना एक अलग ही परिवेश एवं महत्व है। अनेक शहरी जीवन की रचनाओं के बीच स्वच्छ ग्रामीण जीवन पर आधारित रचनाओं की अपनी उष्मलता थी। फणीश्वर नाथ रेणु एवं प्रेमचंद जैसे उपन्यासकारों ने ग्रामीण परिवेश पर आधारित उपन्यासों के माध्यम से हिंदी साहित्य जगत को एक नई दिशा प्रदान की है। रेणु जी का 'मैला आँचल' और प्रेमचंद जी का 'गोदान' साहित्य जगत के लिए 'मील का पत्थर' साबित हुआ है। आंचलिक उपन्यासों ने इन साहित्यकारों को सफलता के शीर्ष पर पहुंचा दिया है। 'मैला आँचल' और 'गोदान' दोनों ही सभी दृष्टि से महत्वपूर्ण उपन्यास साबित हुए हैं। प्रेमचंद जी को हम पूर्णतः ग्रामीण कहानीकार नहीं कह

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सकते परन्तु यह भी सही है , कि उन्होंने अधिकांश रूप से गांवों को ही अपने साहित्य लेखन की पृष्ठभूमि बनाया लेकिन उन्होंने स्वयं को ग्रामीण वातावरण से जोड़कर सीमित नहीं किया। वस्तुतः उन्होंने हमारे समाज तथा इतिहास का अध्ययन किया था। गांवों के जीवन से निकट परिचय रखने के कारण उन्होंने ग्रामीण जीवन की सामाजिक स्थिति पर विचार किया तथा अपनी लेखनी से व्यक्त किया।

फणीश्वर नाथ रेणु, प्रेमचंद, यशपाल, अज्ञेय, मृदुला गर्ग, कृष्णा अग्निहोत्री आदि कथाकारों के समान स्वतंत्रता के पश्चात् जिन स शक्त साहित्यकारों के नाम तेजी से उभरे है, उनमें मन्नू भण्डारी का नाम सर्वाधिक चर्चित नाम है। साधारण से साधारण पाठक वर्ग भी मन्नू जी के नाम से परिचित है। शायद ही हिन्दी साहित्य में ऐसा कोई पाठक होगा , जो मन्नू भण्डारी के नाम से अपरिचित होगा, क्योंकि वे अपने समय की उन प्रसिद्ध लेखिकाओं में से है , जिनकी रचनाएँ पुरूष की आकांक्षा ओं से प्रेरित होकर नारी का चित्र उपस्थित नहीं करती, बल्कि नारी का नारी की दृष्टि से चित्रण करती हैं। समकालीन हिन्दी के प्रतिनिधि साहित्यकारों में श्रीमती मन्नू भंडारी का अपना एक विशिष्ट स्थान है। उनके साहित्य में समकालीन सामाजिक और राजनीतिक जीवन-मूल्य बहुआयामी रूप में उभरे हैं। साहित्य की परंपरा सदियों से इस समाज में चली आ रही है। यह समाज तभी तक जीवित है जब तक इस में साहित्य ने विकास के अनेक सोपान तय किये हैं। मन्नूजी ने कहानियों एवं उपन्यासों की रचना के साथ-साथ अपने मध्यमवर्गीय जीवन की घटनाओं को साहित्य के रूप में समाज के सम्मुख रखा है। जीवन के विविध पक्ष जैसे वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों , पारिवारिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं का सूक्ष्म मूल्यांकन किया है।

आज का भारतीय समाज , परंपरागत मूल्यों को त्यागकर एक नई अनजान , कृत्रिम और खोखली मानसिकता की ओर अग्रसर हो रहा है। परिवर्तन जीवन के लिए आवष्यक है, लेकिन अंधी दौड़ की आकांक्षा उससे भी अधिक घातक होती है। मन्नू जी सही अर्थों में आधुनिकता के महानगरीय परिवेश की कथा लेखिका हैं। इसलिए महानगरीय जीवन में संबंध सामाजिक , पारिवारिक और मध्यमवर्गीय जीवन की विडम्बना यें ही उनके उपन्यास साहित्य की विषय-वस्तु रहा है। परन्तु ग्रामीण परिवेश की भी उन्होंने अपने कथा साहित्य में महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराई है। उनकी कहानियाँ 'मजबूरी', 'छत बनाने वाले ', 'इनकम टैक्स और नींद ', 'अ-लगाव' इत्यादि कहानियाँ ग्रामीण पृष्ठभूमि वाली कहानियाँ है। उनका'महाभोज' उपन्यास सन् 1976 में प्रका शित हुआ। 'महाभोज' ने मन्नू भंडारी को हिन्दी कथा साहित्य के शीर्ष पर पहुँचा दिया। प्रायः दे श की पेचीदा स्थितियाँ और भ्रष्ट राजनीति महिला कथा लेखन का कथ्य नही बनती , लेकिन मन्नू भंडारी इस संबंध में एक अपवाद सिद्ध हुई है। सामान्यतः 'महाभोज' को राजनैतिक उपन्यास कहा जाता है , क्योंकि इसमें दे श की बिगड़ी राजनीति का जीवंत चित्र उकेरा गया है। 'महाभोज' उपन्यास राजनैतिक विडम्बनाओं का खुला दस्तावेज है। हिन्दी कथा-साहित्य में ग्रामीण जीवन पर आधारित उपन्यास गोदान , मैला आँचल, 'पूस की रात ', 'कफन', 'ठाकुर का कुआं' आदि के बाद मन्नू जी का 'महाभोज' उपन्यास 'मील का पत्थर 'है। 'महाभोज' में कथानक के नाम पर बहुत से जटिल सूत्र सामने आते है। स्वाधीनता के बाद के भारत का एक

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गाँव, उस गाँव तक पहुँची हुई दलगत राजनीति , चुनाव के लिये अपनाये जाने वाले गलत तरीके , राजनीति का अपराधीकरण , पुलिस का विकृत रूप, बुद्धिजीवों की तटस्थता और पत्रकारों की अवसरवादिता ये सारे तत्व इस उपन्यास की कथा वस्तु में साकार हो उठते हैं।

महाभोज में राजनीति और मनोविज्ञान

'महाभोज' के दा साहब मुख्यमंत्री है और सुकुल बाबू विरोधी पक्ष के नेता है। जोरावर राजनीतिक सुरक्षा में पलने वाला गुण्डा और हत्यारा है। सक्सेना और सिन्हा पुलिस अधिकारी है , दत्ता बाबू सम्पादक है। महे श शर्मा बुद्धिजीवी है , जो इस बात की खोज करने देहात पहुँचता है कि वर्ग संघर्ष और जाति संघर्ष क्या होता है। आम चुनाव के कुछ पूर्व ही देहात में बिसेसर नामक युवक की हत्या हो जाती है। इस हत्या को आत्महत्या साबित करने में मन्नू जी ने जितनी कुशलता के साथ कथावस्तु का निर्वाह किया है , वह अन्यत्र दुर्लभ है। राजनीति में किस तरह अपराधी और भ्रष्ट लोगों का प्रवे श हो चुका है , इस उपन्यास में साफ चित्रित है। 'महाभोज' लोकतांत्रिक समाजवादी विचारधारा पर आधारित एक ऐसा उपन्यास है जिसमें दलित और शोषित वर्ग पर पुलिस और लोकतांत्रिक समाजवादी व्यवस्था के भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के अत्याचार को बतलाया गया है।

भारतीय गांवो में आज भी सामूहिक भावना और परस्पर सहयोग देने वाली आंकाक्षाओं का अभाव है। गाँव की परिस्थितियों व ग्रामीणों में व्याप्त अज्ञानता का राजनीतिज्ञों ने भरपूर शोषण किया है। भारतीय ग्रामीणों के सीधे व सहज जीवन को राजनेताओं ने अपने स्वार्थ के व शीभूत घिनोना बना दिया है। जिस कारण ग्रामीण जनता के जीवन में अविश्वास , वर्गभेद, स्वार्थी भावना , असम्प्रति, अनैतिक कार्य व्यापार विस्तार पा रहे है। मन्नू भंडारी ने 'महाभोज' में ग्रामीण जीवन की इस नारकीय स्थिति का विविध रूपों में चित्रण किया है। ग्रामीण समाज में जो जातिभेद, वर्गभेद, उत्पन्न हुए है , उनसे वहां का सामान्य जनजीवन ध्वस्त हो गया है। वहां उपस्थित हरिजन वर्ग पर किये गए अत्याचारों का अलग ही रूप है। इसी अत्याचार व शोषण का वर्णन लेखिका ने बिसू नामक हरिजन युवक की हत्या के माध्यम से व्यक्त किया है। 'महाभोज' के सम्बन्ध में डॉ. रामविनोद सिंह अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं, "हमारे देश कि राजनीति सत्ता प्रतिष्ठानों पर आधिपत्य प्राप्त करने की राजनीति बन गई है। ऐसी राजनीति समाज को कभी वर्ग संघर्ष और कभी जाति संघर्ष की भूमिका की और अग्रसर करती है। जब राजनीति रचनात्मक हो तब वर्गसंघर्ष से रचनात्मकता उभर कर आ सकती है लेकिन यदि राजनीति का भी विघटन हो गया हो तो निर्माण की आशा कैसे ? भारतीय राजनीति व्यक्ति को जाति समूहों में संगठित और बांटती आई है। यह एक सुविधाजनक कार्य प्रणाली है। इसमें प्रत्येक जाति के चालाक लोग अपनी जाती की संगठन शक्ति का उपयोग कर सत्ता प्राप्त करते है, फिर उस जाति का उत्थान नहीं करते बल्कि उसकी भावना शक्ति का शोषण करते है।"4

'महाभोज' में मन्नू भंडारी ने ऐसे ही चालाक राजनीतिक लोगों का भंडाफोड़ किया है, जिसका आधुनिक स्वर तीखा व तेज है। वे स्पष्ट करती हैं कि इन राजनीतिज्ञों ने हरिजन वर्ग का न केवल शोषण कर उन्हें संकट में डाला अपितु उनके साथ अमानवीय एवं घिनोना व्यवहार कर उन्हें संत्रास दिया है। औरतों के साथ बलात्कार भी किया गया है। महाभोज में हरिजन युवक की

हत्या और उस हत्याकांड का उपयोग राजनीतिज्ञों द्वारा अपने हित में करना सर्वथा गहरा आधुनिक तत्व है।

गांव सरोहा में घरों में आग लगा दी जाती है और उसके एक या डेढ़ माह बाद ही बिसू नामक व्यक्ति की हत्या कर दी जाती है। राजनेता इसे अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए उपयोग में लाते हैं। अपने स्वार्थ के लिए वे गरीब व्यक्ति की मौत को भी भुना लेते हैं। उसके परिवार वाले, दोस्तों तथा रिश्तेदारों पर क्या बीत रही है इससे उन्हें कोई सरोकार नहीं रहता। वे उनको इस संकट की घड़ी में सच्ची सहानुभूति नहीं दिखाते बल्कि अपने स्वार्थ से वशीभूत हो उन्हें संत्रास देने चले आते है, जिसमे मुख्य मंत्री दा साहब भी शामिल है और उन्हें सफलता भी मिलती है। महाभोज के सुकुल बाबू दा साहब के विरोधी है। जो कि उन्ही की भांति एक घाघ व स्वर्थी पुरुष है। दा साहब एक अवसरवादी नेता की भूमिका निभाते हुए सुकुल बाबु के विरुद्ध भाषण देते है- "समझदार आदमी है सुकुल बाबू... मैं उनका आदर करता हूँ पर उनका यह रवैया आपस में द्वेष फैलाने वाला है, मैं ठीक नहीं समझता इसे लेकिन स्वार्थ कभी कभी आदमी को एसी अविवेकी बात करने के लिए उकसाता है।" वे जनता को प्रभावित करने के लिए नए-नए ढोंग रचते है और भोली-भाली जनता उनसे प्रभावित हुए बिना नही रह पाती है, क्योंकि उनका बाहरी व्यक्तित्व सत्य व सौम्यता से भरा हुआ है। दा साहब जैसे शातिर और घाघ व्यक्ति के बाहरी स्वरूप का चित्रण मन्नू जी ने इस प्रकार किया है- "दा साहब का पूरा व्यक्तित्व ही जैसे भव्यता के फ्रेम में मढ़ा हुआ है। गौर वर्ण, सुता हुआ शरीर। कही भी एक इंच फालतू चरबी नहीं दिखायी देती शरीर पर। दिखती है तो केवल गरिमा। जीवन में संयम और आहार व्यवहार में नियम-यही असली राज है उनकी गठी हुई देह और गरिमामय व्यक्तित्व का। बोलते भी हैं तो आवाज में अधिक उतार-चढ़ाव नही आता। एक ही स्वर में बोलते है- धीरे-धीरे। शब्द मात्र भी जीभ से फिसले नही लगते। लगता है, हर शब्द जैसे किसी गहरे सोच-विचार की उपज है। दा साहब के मुँह से अपने विरोधियों के लिए हल्की बात भी कभी किसी ने नहीं सुनी होगी। व्यवहार में ऐसा संतुलन संयम बड़ी साधना से ही आता है और दा साहब का जीवन-साधना का इतिहास। साधना की आग में तपकर ही कुंदन सा निखर आया है उनका व्यक्तित्व।"5 परन्तु वास्तविकता में दा साहब का आचरण ठीक इसके विपरीत है। वे अपना पद एवं रूतबा बचाने वाले स्वार्थी एवं ढोंगी पुरूष है। जनता उनके बाहरी व्यवहार तथा लच्छेदार बातों से उनके जाल में फंस जाती है। दा साहब इतने स्वार्थी है कि सरोहा गांव के बिसू की मौत को भी वे अपनी स्वार्थ सिद्धी के लिए प्रयोग करते है। बिसू की मौत के बाद वे उसके घर जाकर उसके पिता हीरा को सांत्वना देकर अपना दया भाव का परिचय देते है, जबकि वास्तविकता कुछ और ही है, उन्हीं के पाले हुए एक गुन्डे जोरावर ने बिसू की हत्या की है , परन्तु दा साहब उसे साफ बचा लेते हैं। बिसू के गांव जाकर वह स्वरोजगार योजना के माध्यम से गांव की भोली-भाली जनता को अपने वश में कर लेते हैं। बिसू की हत्या में उसके ही दोस्त बिन्दा को फंसा दिया जाता है जो कि एक गरीब क्रान्तिकारी युवक है। जोरावर को बचाने के लिए दा साहब जिस तरह के दांव-पेंच अपनाते है मन्नू जी ने उसका सफल चित्रण किया है। वे गांव वालों से वोट हथियाने के लिए विभिन्न हथकण्डे अपनाते

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

देखे गए हैं। अन्त में वे अपने स्वार्थ को पूर्ण भी कर लेते हैं।

दा साहब की ही भाँति 'महाभोज' के सुकुल बाबू भी एक स्वार्थी, ढ़ोगी तथा घाघ व्यक्ति है। उनका व्यक्तित्व लेखिका के कथनों में इस प्रकार है - "दा साहब की किसी भी बात में कोई समानता नही है, शुकुल बाबू की। सांवरा रंग , नाटा कद, थोड़ा थुलथुल शरीर, दा साहब की तरह सौम्य-संयत भी नहीं। सुरा-सुंदरी से किसी तरह का कोई परहेज नही, बल्कि कहना चाहिए अनुरागी है दोनों के। जग के 'शकल पदारथ' न पाने वाले करमहीनों में अपने को वे शुमार नहीं करवाना चाहते। मस्त-फक्कड़ है, एकदम। निजी दोस्तों के बीच फूहड़ भाषा का प्रयोग करते है धड़ल्ले से। गाली गलौज से भी परहेज नही है।6

सुकुल बाबू भी चुनाव जितने के लिए अनेक दांव-पेंच अपनाते हैं वह भी दा साहब की टक्कर के व्यक्ति हैं परन्तु दा साहब के आगे वे अधिक टिक नही पाते है।

इस प्रकार मन्नू भंडारी ने अपने ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास 'महाभोज' के माध्यम से भ्रष्ट नेताओं व गंदी राजनीति का खुलकर चित्रण किया है। बिसू की मौत का जिस प्रकार से सभी अवसरवादी नेताओं ने लाभ उठाया है, उससे उपन्यास का शीर्षक 'महाभोज' सार्थक सिद्ध हो गया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ.भगवती प्रसाद शुक्ल: आंचलिकता से आधुनिकता बोध, प्रथम संस्करण, 1972 पृष्ठ. 130

2. तटस्थ - अक्तूबर 1972, पृष्ठ 22

3. प्रहलाद अग्रवाल: हिन्दी कहानी - सांतवा द शक, प्रथम संस्करण, 1973, पृष्ठ. 08

4. डॉ.. रामविनोद सिंह: आठवें द शक के हिन्दी उपन्यास पृष्ठ165

5.मन्नू भण्डारी: संपूर्ण कहानियाँ -महाभोज - पृष्ठ. 443-444

6. मन्नू भण्डारी: संपूर्ण कहानियाँ -महाभोज पृष्ठ454